सम्यक्त्व मार्गणा

Presentation Developed By : Smt Sarika Vikas Chhabra

पुढवी जलं च छाया, चउरिंदियविसयकम्मपरमाणु।
छव्विहभेयं भणियं, पोग्गलदव्वं जिणवरेहिं॥602॥

❁अर्थ - पृथ्वी, जल, छाया, नेत्रों को छोड़कर अन्य चार इन्द्रियों का विषय, कार्मण स्कंध और परमाणु – ऐसे छह प्रकार के पुद्गल द्रव्य जिनेश्वर देवों ने कहे हैं ॥602॥

बादरबादर बादर, बादरसुहमं च सुहमथूलं च।
सुहमं च सुहमसुहमं, धरादियं होदि छब्भेयं॥603॥

❀अर्थ - बादरबादर, बादर, बादरसूक्ष्म, सूक्ष्मबादर, सूक्ष्म, सूक्ष्मसूक्ष्म – इस तरह पुद्गल द्रव्य के छह भेद हैं, जैसे उक्त पृथ्वी आदि ॥603॥

पुद्गल द्रव्य के भेद

	बादर-बादर	बादर	बादर-सूक्ष्म
स्वरूप	ठोस पदार्थ	द्रव पदार्थ	नेत्र से दिखे पर पकड़ में न आये
	छेदन, भेदन एवं अन्य जगह ले जाने के योग्य हो	छेदन, भेद के योग्य न हो	
		अन्यत्र ले जाने योग्य हो	
दृष्टांत	लकड़ी, पत्थर, पृथ्वी	जल, तेल	छाया, प्रकाश

पुद्गल द्रव्य के भेद

	सूक्ष्म-बादर	सूक्ष्म	सूक्ष्म-सूक्ष्म
स्वरूप	नेत्र के बिना शेष 4 इन्द्रियों के विषय	इन्द्रियों से ग्रहण न हो	स्कंध अवस्था से रहित
		परमावधि, देशावधि गोचर हो	सर्वावधि गोचर हो
दृष्टांत	वायु, रस, सुगंध, ध्वनि	कार्मण वर्गणा	परमाणु

खंधं सयलसमत्थं, तस्स य अद्धं भणंति देसो त्ति।
अद्धद्धं च पदेसो, अविभागी चेव परमाणू॥604॥

❁अर्थ - जो सर्वांश में पूर्ण है उसको स्कन्ध कहते हैं। उसके आधे को देश और आधे के आधे को प्रदेश कहते हैं। जो अविभागी है उसको परमाणु कहते हैं ॥604॥

पुद्गल के प्रकार

देश

प्रदेश

परमाणु

सर्वांश में पूर्ण	स्कंध का आधा	देश का आधा	अविभागी पुद्गल

उदाहरण मानाकि एक 16 परमाणु का स्कंध है । तब स्कंध, देश आदि इस प्रकार होंगे ।

(16, 15,....9)	(8, 7,....5)	(4, 3, 2)	(1)

गदिठाणोग्गहकिरिया-साधणभूदं खु होदि धम्मतियं।
वत्तणकिरियासाहण-भूदो णियमेण कालो दु॥605॥

❁अर्थ - गति, स्थिति, अवगाह इन क्रियाओं के साधन क्रम से धर्म, अधर्म, आकाश द्रव्य हैं और

❁वर्तना क्रिया का साधनभूत नियम से काल द्रव्य है ॥605॥

गति

क्षेत्र से क्षेत्रांतर प्राप्त होने को गति कहते हैं ।

जैसे	वैसे
मछलियों के गमन का साधनभूत जल है	गति क्रियावान जीव और पुद्गलों के गतिक्रिया का साधनभूत धर्मद्रव्य है

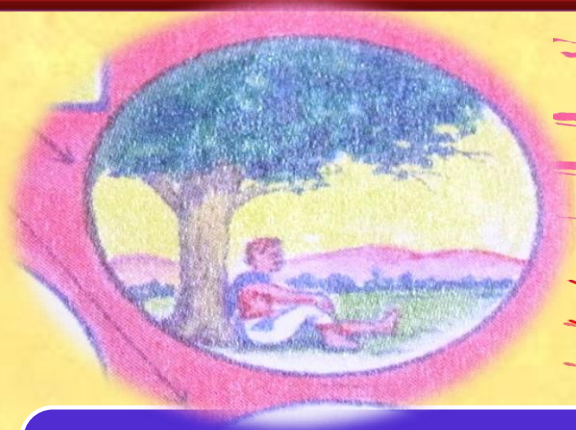

स्थिति

गतिपूर्वक क्षेत्र में ठहरने को स्थिति कहते हैं ।

जैसे	वैसे
पथिक जनों के ठहरने का साधनभूत छाया है	स्थान-क्रियावान जीव और पुद्गलों के स्थान क्रिया का साधनभूत अधर्मद्रव्य है

अवगाह

आकाश में रहने को अवगाह कहते हैं ।

जैसे	वैसे
निवास करने वालों के रहने का साधनभूत घर है	अवगाह-क्रियावान जीवादि के अवगाह क्रिया का साधनभूत आकाश है

धर्मादि द्रव्य में अवगाह क्रिया उपचार से कही है ।

वर्तना (परिणमन)

सर्व द्रव्यों को वर्तना क्रिया का साधनभूत काल द्रव्य है ।

जैसे	वैसे
कुम्हार का चाक चक्र को घुमने में सहकारी है	समस्त अन्य द्रव्य के परिणमन में काल द्रव्य सहकारी है

अण्णोण्णुवयारेण य, जीवा वट्टंति पुग्गलाणि पुणो।
देहादीणिव्वत्तण-कारणभूदा हु णियमेण॥606॥

❁अर्थ - जीव परस्पर में उपकार करते हैं - जैसे सेवक स्वामी की हितसिद्धि में प्रवृत्त होता है और स्वामी सेवक को धनादि देकर संतुष्ट करता है तथा

❁पुद्गल शरीरादि उत्पन्न करने में कारण है ॥606॥

जीव पर उपकार (निमित्त)

- जीव का
  - परस्पर उपकार
- पुद्गल का
  - कर्म
  - नोकर्म
  - वचन
  - मन
  - श्वासोच्छ्वास

पुद्गल का पुद्गल पर उपकार

जैसे जलादि को कतकफल, लोहे को जल

आहारवग्गणादो, तिण्णि सरीराणि होंति उस्सासो।
णिस्सासो वि य तेजो-वग्गणखंधादु तेजंगं॥607॥

- अर्थ - तेईस जाति की वर्गणाओं में से आहारवर्गणा के द्वारा औदारिक, वैक्रियिक, आहारक ये तीन शरीर और श्वासोच्छ्वास होते हैं तथा
- तेजोवर्गणारूप स्कन्ध के द्वारा तैजस शरीर बनता है ॥607॥

आहार वर्गणा से बनता है

औदारिक शरीर

वैक्रियिक शरीर

आहारक शरीर

श्वासोच्छ्वास

तैजस वर्गणा से
तैजस शरीर बनता है ।

भासमणवग्गणादो, कमेण भासा मणं च कम्मादो।
अट्ठविहकम्मदव्वं, होदि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥608॥

- अर्थ - भाषा वर्गणा के स्कंधों से चार प्रकार की भाषा होती है।
- मनोवर्गणा के स्कंधों से द्रव्यमन होता है।
- कार्मणवर्गणा के स्कंधों से आठ प्रकार का कर्म होता है, ऐसा जिनदेव ने कहा है ॥608॥

भाषा
वर्गणा से

मनो
वर्गणा से

कार्मण
वर्गणा से

भाषा, वचन

द्रव्यमन

8 प्रकार के
कर्म

णिद्धत्तं लुक्खत्तं, बंधस्स य कारणं तु एयादी।
संखेज्जासंखेज्जा-णंतविहा णिद्धलुक्खगुणा॥609॥

- अर्थ - बंध का कारण स्निग्धत्व और रूक्षत्व है।
- इस स्निग्धत्व या रूक्षत्व गुण के एक से लेकर संख्यात, असंख्यात, अनंत भेद हैं ॥609॥

स्निग्ध गुण

- चिकनी (Smooth) अवस्था

रूक्ष गुण

- रुखी (Rough) अवस्था

जैसे जल, बकरी का दूध, गाय का दूध, भैंस का दूध, ऊँटनी का दूध, घी में चिकनाई (स्निग्धता) अधिक-अधिक है ।

धूलि, बालू, रेत, पत्थर आदि में रुक्षता है ।

ऐसे स्निग्ध-रुक्ष गुण पुद्गल में पाए जाते हैं ।

इनके अंशों को ही गुण कहा जाता है ।

एगगुणं तु जहण्णं, णिद्धत्तं विगुणतिगुणसंखेज्जाऽ- ।
संखेज्जाणंतगुणं, होदि तहा रुक्खभावं च॥610॥

- अर्थ - स्निग्धगुण जो एक गुण है, वह जघन्य है, जिसका एक अंश हो उसको एक गुण कहते हैं।
- उससे लेकर द्विगुण, त्रिगुण, संख्यातगुण, असंख्यातगुण, अनंतगुणरूप स्निग्धगुण जानना। वैसे ही रूक्षगुण भी जानना।
- केवलज्ञानगम्य सबसे थोड़ा तो स्निग्धत्व-रूक्षत्व उसको एक अंश मानकर उस अपेक्षा स्निग्ध रूक्ष गुणों के अंशों का यहाँ प्रमाण जानना ॥610॥

सबसे जघन्य स्निग्धत्व

इससे 1 गुण अधिक स्निग्धत्व

इससे 1 गुण अधिक स्निग्धत्व

एक गुण स्निग्ध

द्विगुण स्निग्ध

त्रिगुण स्निग्ध

इस प्रकार से एक-एक गुण बढ़ाते हुए संख्यातगुण, असंख्यातगुण, अनंत-गुणरूप स्निग्ध तक जानना ।

इसी प्रकार रुक्ष भी एक गुण से अनंत गुण तक समझना चाहिए ।

एवं गुणसंजुत्ता, परमाणू आदिवग्गणम्मि ठिया।
जोग्गदुगाणं बंधे, दोण्हं बंधो हवे णियमा॥611॥

❁अर्थ - इसप्रकार के स्निग्ध और रूक्षगुणों से संयुक्त परमाणु अणुवर्गणा में विद्यमान हैं। उनमें से योग्य दो परमाणुओं के बंधस्थान को प्राप्त होने पर उन्हीं दो का बंध होता है ॥611॥

वह परमाणुओं के बंधन की क्या योग्यता है? सो ही आगे कहते हैं–

णिद्धणिद्धा ण बज्झंति, रुक्खरुक्खा य पोग्गला ।
णिद्धलुक्खा य बज्झंति, रूवारूवी य पोग्गला॥612॥

- अर्थ - स्निग्धगुणयुक्त पुद्गलों से स्निग्धगुणयुक्त पुद्गल बँधते नहीं हैं और रूक्षगुणयुक्त पुद्गलों से रूक्षगुणयुक्त पुद्गल बँधते नहीं हैं - यह कथन सामान्य है, बंध भी होता है, उसका विशेष आगे कहेंगे।
- पुनश्च स्निग्धगुणयुक्त पुद्गलों से रूक्षगुण युक्त पुद्गल बँधते है ।
- उन पुद्गलों की दो संज्ञा हैं - एक रूपी, एक अरूपी ॥612॥

बंध का सामान्य नियम

स्निग्ध का स्निग्ध से बंध	रुक्ष का रुक्ष से बंध	स्निग्ध का रुक्ष से बंध
✗	✗	✓

णिद्धिदरोलीमज्झे, विसरिसजादिस्स समगुणं एक्कं।
रूवि त्ति होदि सण्णा, सेसाणं ता अरूवि त्ति॥613॥

- अर्थ - स्निग्ध-रूक्ष गुणों की पंक्ति विसदृश जाति है अर्थात् स्निग्ध की और रूक्ष की परस्पर विसदृश जाति है, उनमें जो कोई एक समान गुण हो उसको रूपी ऐसी संज्ञा द्वारा कहते हैं और
- समान गुण बिना अवशेष रहे उनको अरूपी ऐसी संज्ञा द्वारा कहते हैं ॥613॥

पुद्गल

रूपी

विसदृश जाति में समान गुण वाले पुद्गल

अरूपी

असमान गुण वाले पुद्गल (रूपी को छोड़कर शेष सभी)

दोगुणणिद्धाणुस्स य, दोगुणलुक्खाणुगं हवे रूवी।
इगितिगुणादि अरूवी, रुक्खस्स वि तं व इदि जाणे॥614॥

❁अर्थ - दूसरा है गुण जिसके या दो हैं गुण जिसके ऐसा जो द्विगुण स्निग्ध परमाणु उसके लिये द्विगुण रूक्ष परमाणु रूपी कहलाता है और अवशेष एक, तीन, चार इत्यादि गुणधारक परमाणु अरूपी कहलाते हैं।

❁ऐसे ही द्विगुण रूक्षाणु के लिये द्विगुण स्निग्धाणु रूपी कहलाता है और अवशेष एक, तीन इत्यादि गुणधारक परमाणु अरूपी कहलाते हैं ॥614॥

स्निग्ध गुण पुद्गल	रुक्ष गुण पुद्गल
1 गुण	1 गुण
2 गुण	2 गुण
3 गुण	3 गुण
4 गुण	4 गुण
5 गुण	5 गुण
:	:
:	:

2 गुण स्निग्ध परमाणु की अपेक्षा 2 गुण रुक्ष परमाणु रूपी है ।

शेष सभी अरूपी हैं ।

इसी प्रकार 2 गुण रुक्ष परमाणु की अपेक्षा 2 गुण स्निग्ध परमाणु रूपी है ।
शेष सभी अरूपी हैं ।

इसी प्रकार शेष गुण वाले परमाणुओं में लगाना चाहिए ।

णिद्धस्स णिद्धेण दुराहिएण, लुक्खस्स लुक्खेण दुराहिएण।
णिद्धस्स लुक्खेण हवेज्ज बंधो, जहण्णवज्जे विसमे समे वा॥615॥

❁अर्थ - एक स्निग्ध परमाणु का दूसरे दो गुण अधिक स्निग्ध परमाणु के साथ बंध होता है।

❁एक रूक्ष परमाणु का दूसरे दो गुण अधिक रूक्ष परमाणु के साथ बंध होता है।

❁एक स्निग्ध परमाणु का दूसरे दो गुण अधिक रूक्ष परमाणु के साथ भी बंध होता है।

❁सम विषम दोनों का बंध होता है, किन्तु जघन्य गुणवाले का बंध नहीं होता ॥615॥

किसका किस से बंध?

स्निग्ध का स्निग्ध से बंध	• 2 गुण अधिक होने पर
रुक्ष का रुक्ष से बंध	• 2 गुण अधिक होने पर
स्निग्ध-रुक्ष का परस्पर बंध	• सर्व प्रकार से (सम गुण होने पर, विषम गुण होने पर)

नोट — यह बंध के नियम तत्त्वार्थ सूत्र से किंचित् भिन्न दिखते हैं ।

जघन्य गुण पुद्गल का बंध?

एक गुण स्निग्ध का किससे बंध होगा?

- किसी से भी नहीं

एक गुण रुक्ष का किससे बंध होगा?

- किसी से भी नहीं

क्यों?

- क्योंकि जघन्य गुणवाले परमाणु का बंध कभी नहीं होता है ।।

विशेष

जघन्य का तो किसी से बंध नहीं ।

2 गुण अधिक होने पर बंध होता है — यह नियम सदृश जाति में लागू होता है, विसदृश में नहीं ।

यदि विसदृश जाति के पुद्गल हैं, तो समान गुण, 1 गुण अधिक, 2 गुण अधिक, 3 गुण अधिक आदि का बंध संभव है ।

णिद्धिदरे समविसमा, दोत्तिगआदी दुउत्तरा होंति।
उभयेवि य समविसमा, सरिसिदरा होंति पत्तेयं॥616॥

❁अर्थ - स्निग्ध या रूक्ष दोनों में ही दो गुण के ऊपर जहाँ दो-दो की वृद्धि हो वहाँ समधारा होती है और जहाँ तीन गुण के ऊपर दो-दो की वृद्धि हो उसको विषमधारा कहते हैं।

❁सो स्निग्ध और रूक्ष दोनों में ही दोनों ही धारा होती हैं तथा प्रत्येक धारा में रूपी और अरूपी होते हैं ॥616॥

स्निग्ध सम धारा	स्निग्ध विषम धारा	रुक्ष सम धारा	रुक्ष विषम धारा
2 गुण	1 गुण	2 गुण	1 गुण
4 गुण	3 गुण	4 गुण	3 गुण
6 गुण	5 गुण	6 गुण	5 गुण
8 गुण	7 गुण	8 गुण	7 गुण
10 गुण	9 गुण	10 गुण	9 गुण
:	:	:	:
:	:	:	:

ये सम स्निग्ध रूपी भी हैं, अरूपी भी हैं ।

जैसे 4 गुण स्निग्ध पुद्गल के लिए 4 गुण रुक्ष पुद्गल रूपी है । शेष अरूपी है ।

ऐसे ही विषम स्निग्ध और रुक्ष पुद्गलों पर भी लगाना चाहिए |

दोत्तिगपभवदुउत्तर-गदेसुणंतरदुगाण बंधो दु।
णिद्धे लुक्खे वि तहा, वि जहण्णुभये वि सव्वत्थ॥617॥

❁अर्थ - स्निग्ध और रूक्ष में सम पंक्ति में दो से लेकर दो-दो बढ़ते अंश तथा विषम पंक्ति में तीन से लेकर दो-दो बढ़ते अंश क्रम से पाये जाते हैं। वहाँ अनंतरद्विक का बंध होता है। कैसे?

❁स्निग्ध के दो अंश या रूक्ष के दो अंशवाले पुद्गल का चार अंशवाले स्निग्ध या रूक्ष पुद्गल के साथ बंध होता है। स्निग्ध के या रूक्ष के तीन अंशवाले पुद्गल का पाँच अंशवाले स्निग्ध या रुक्ष परमाणु के साथ बंध होता है। ऐसे दो अधिक होने पर बंध जानना।

❁परन्तु एक अंशरूप जघन्य गुणवाले में बंध नहीं होता, अन्यत्र स्निग्ध, रूक्ष में सर्वत्र बंध जानना ॥617॥

इन सम, विषम पंक्तियों में अनंतर द्विक का ही बंधन होता है ।

स्निग्ध सम

2 गुण

4 गुण

6 गुण

:

इनमें 2 गुणवाले का 4 गुणवाले से ही बंध संभव है ।

4 गुणवाले का 6 गुणवाले से बंध संभव है ।

परन्तु 2 गुणवाले का 6 गुण आदि से बंध संभव नहीं है ।

सर्वत्र जघन्य गुण का किसी से बंध संभव नहीं है ।

णिद्धिदरवरगुणाणू, सपरट्ठाणं वि णेदि बंधट्ठं।
बहिरंतरंगहेदुहि, गुणंतरं संगदे एदि॥618॥

❁अर्थ - जघन्य एक गुणयुक्त स्निग्ध या रूक्ष परमाणु स्वस्थान या परस्थान में बंध के लिये योग्य नहीं है। परन्तु वही परमाणु यदि बाह्य-अभ्यंतर कारण से दो आदि अन्य अंशों को प्राप्त हो जाये तो बंध योग्य होता है ॥618॥

जघन्य गुणवाला परमाणु स्निग्ध हो या रुक्ष हो,

स्वस्थान अथवा परस्थान दोनों में ही बंध को प्राप्त नहीं होता ।

क्या हमेशा ही बंध को प्राप्त नहीं होता ?

जब अंतरंग-बहिरंग कारणों से

जघन्य गुण छोड़कर

2, 3 आदि गुणों को प्राप्त करता है,

तब बंध योग्य हो जाता है ।

णिद्धिदरगुणा अहिया, हीणं परिणामयंति बंधम्मि।
संखेज्जासंखेज्जा-णंतपदेसाण खंधाणं॥619॥

❁अर्थ - संख्यात, असंख्यात, अनंत प्रदेशों के स्कंधों में स्निग्धगुणस्कंध या रूक्षगुणस्कंध के, जिसके भी दो गुण अधिक होते हैं, वे बंध के होते हुये हीन गुणवाले स्कंध को परिणमाते हैं।

❁जैसे दो स्कंध हैं, एक स्कंध में स्निग्ध या रूक्ष के पचास अंश हैं और एक में बावन अंश हैं और उन दोनों स्कंधों का एक स्कंध हुआ तो वहाँ पचास अंश वाले को बावन अंशरूप वाला परिणमाता है। ऐसे सर्वत्र जानना ॥619॥

बंध होने पर जिसके गुण अधिक हैं, वह हीन गुणवाले को अपने समान कर लेगा।

हीन गुणवाला अधिक गुणवाला हो जाता है ।

यथा 50 गुणवाला स्कंध 55 गुणवाले स्कंध से बंधा, तो दोनों अब 55 गुणवाले स्कंध हो गए हैं ।

ध्यान रहे—स्निग्ध से रुक्ष बने, ऐसा जरूरी नहीं है । गुण सदृश होना यह अनिवार्य है ।

दव्वं छक्कमकालं, पंचत्थीकायसण्णिदं होदि।
काले पदेसपचयो, जम्हा णत्थि त्ति णिद्दिट्ठं॥620॥

❁अर्थ - काल में प्रदेशप्रचय नहीं है इसलिये काल को छोड़कर शेष द्रव्यों को ही पञ्चास्तिकाय कहते हैं ॥620॥

अस्तिकाय

जो प्रदेशों के प्रचय (समूह) से युक्त होवें, वे अस्तिकाय हैं ।

6 द्रव्य – काल द्रव्य = 5 अस्तिकाय

काल द्रव्य अस्ति है, पर काय नहीं है ।

क्योंकि काल के प्रदेशों का समूह नहीं है ।
काल एक प्रदेशी ही है ।

णव य पदत्था जीवा-जीवा ताणं च पुण्णपावदुगं।
आसवसंवरणिज्जर-बंधा मोक्खो य होंति त्ति॥621॥

❁अर्थ - जीव, अजीव, उनके पुण्य और पाप दो; तथा आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष – ये नौ पदार्थ होते हैं ॥621॥

नव पदार्थ

जीवदुगं उत्तट्ठं, जीवा पुण्णा हु सम्मगुणसहिदा।
वदसहिदा वि य पावा, तव्विवरीया हवंति त्ति॥622॥

- अर्थ - जीवपदार्थ और अजीवपदार्थ तो पहले जीवसमास अधिकार में और यहाँ षट्द्रव्य अधिकार में कहे हैं।
- जो सम्यक्त्व गुणयुक्त हो और व्रतयुक्त हो, वे पुण्य जीव हैं तथा
- इनसे विपरीत सम्यक्त्व, व्रतरहित जो जीव, वे पाप जीव हैं ॥622॥

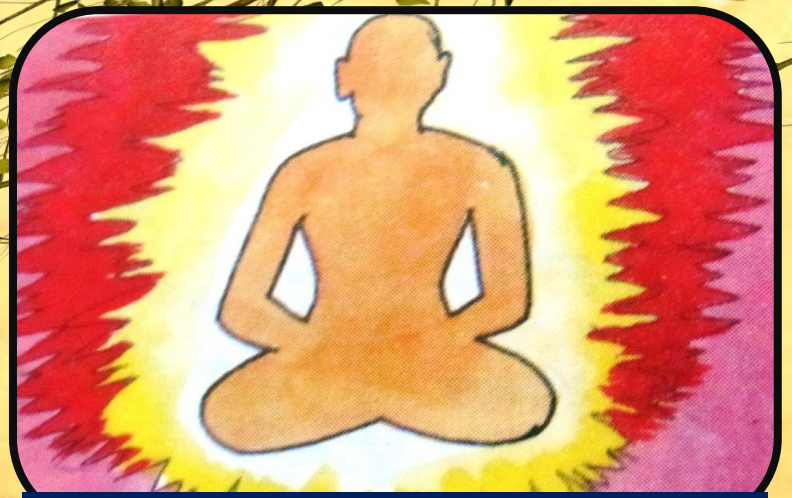

जीव पदार्थ

- चैतन्य, ज्ञान-दर्शन स्वभावी

अजीव पदार्थ

- जड़, चैतन्यरहित

पुण्य, पाप आदि पदार्थ जीव अजीव के ही विशेष हैं ।

इन सभी के जीव और अजीव रूप दो-दो भेद हैं ।

पुण्य जीव

- सम्यक्त्व गुणसहित और व्रतसहित जीव

पाप जीव

- सम्यक्त्व गुणरहित और व्रतरहित जीव

मिच्छाइट्ठी पावा, णंताणंता य सासणगुणा वि।
पल्लासंखेज्जदिमा, अणअण्णदरुदयमिच्छगुणा॥623॥

❁अर्थ - मिथ्यादृष्टि पाप जीव हैं। वे अनंतानंत हैं क्योंकि द्वितीयादि तेरह गुणस्थानवाले जीवों का प्रमाण घटाने से अवशिष्ट समस्त संसारी जीवराशि मिथ्यादृष्टि ही है तथा

❁सासादन गुणस्थानवाले जीव पल्य के असंख्यातवें भाग हैं और ये भी पाप जीव ही हैं क्योंकि अनंतानुबंधी चौकड़ी में से किसी एक प्रकृति के उदय से मिथ्यात्व सदृश गुण को प्राप्त होते हैं ॥623॥

पाप जीव

मिथ्यादृष्टि	सासादन गुणस्थानवर्ती
अनंत	पल्य / असंख्यात

मिच्छा सावयसासण-मिस्साविरदा दुवारणंता य।
पल्लासंखेज्जदिमम-संखगुणं संखगुणमसंखेज्जगुणं ॥624॥

- अर्थ - मिथ्यादृष्टि अनंतानन्त हैं।
- श्रावक देशविरत गुणस्थानवर्ती पल्य के असंख्यातवें भाग हैं।
- सासादन गुणस्थानवाले श्रावकों से असंख्यातगुणे हैं।
- मिश्र सासादनवालों से संख्यातगुणे हैं।
- अविरतसम्यग्दृष्टि मिश्रजीवों से असंख्यातगुणे हैं ॥624॥

मनुष्य

मिथ्यादृष्टि	१३-	असंख्यात
संयतासंयत	$\frac{\text{पल्य}}{(\text{असंख्यात})^3 \times \text{संख्यात}}$	13 करोड़
सासादन	$\frac{\text{पल्य}}{(\text{असंख्यात})^2 \times \text{संख्यात}}$	52 करोड़
मिश्र	$\frac{\text{पल्य}}{(\text{असंख्यात})^2}$	104 करोड़
असंयत सम्यग्दृष्टि	$\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$	700 करोड़

तिरधियसयणवणउदी, छण्णउदी अप्पमत्त वे कोडी।
पंचेव य तेणउदी, णवट्ठविसयच्छउत्तरं पमदे॥625॥

❁अर्थ - प्रमत्त गुणस्थानवाले जीवों का प्रमाण पाँच करोड़ तिरानवे लाख अठानवे हजार दो सौ छह (5,93,98,206) हैं। अप्रमत्त गुणस्थानवाले जीवों का प्रमाण दो करोड़ छ्यानवे लाख निन्यानवे हजार एक सौ तीन (2,96,99,103) है ॥625॥

प्रमत्तसंयत

5,93,98,206

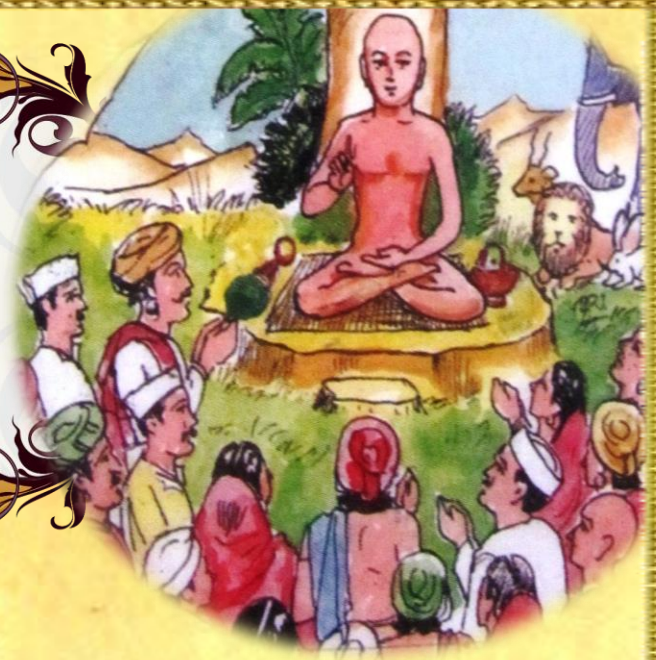

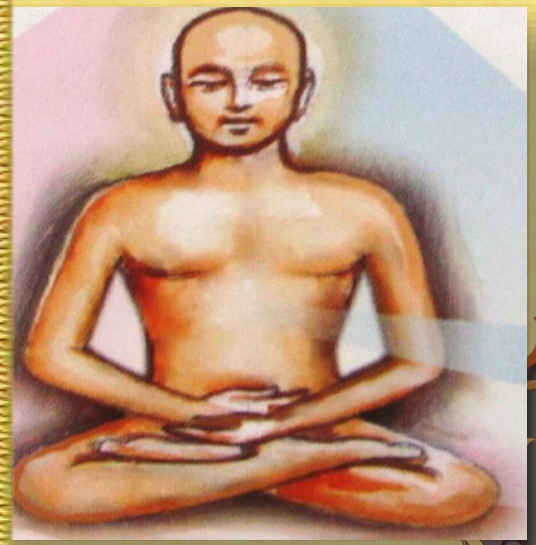

अप्रमत्तसंयत

2,96,99,103

तिसयं भणंति केई, चउरुत्तरमत्थपंचयं केई।
उवसामगपरिमाणं, खवगाणं जाण तद्दुगुणं॥626॥

❁अर्थ - उपशमश्रेणीवाले आठवें, नौवें, दशवें, ग्यारहवें गुणस्थानवाले जीवों का प्रमाण कोई आचार्य तीन सौ कहते हैं, कोई तीन सौ चार कहते हैं, कोई दो सौ निन्यानवे कहते हैं।

❁क्षपकश्रेणीवाले आठवें, नौवें, दशवें, बारहवें गुणस्थानवाले जीवों का प्रमाण उपशम श्रेणीवालों से दूना है ॥626॥

		प्रथम मत	द्वितीय मत	तृतीय मत
उपशामक	8वें, 9वें, 10वें, 11वें गुणस्थानवर्ती	300	304	299
क्षपक	8वें, 9वें, 10वें, 12वें गुणस्थानवर्ती	600	608	598

सोलसयं चउवीसं, तीसं छत्तीस तह य बादालं।
अडदालं चउवण्णं, चउवण्णं होंति उवसमगे॥627॥

❀अर्थ - उपशम श्रेणी पर निरंतर आठ समयों में चढ़नेवाले जीवों की संख्या क्रम से सोलह, चौबीस, तीस, छत्तीस, बयालीस, अड़तालीस, चौवन, चौवन होती है ॥627॥

बत्तीसं अडदालं, सट्ठी वावत्तरी य चुलसीदी।
छण्णउदी अट्ठुत्तर-सयमट्ठुत्तरसयं च खवगेसु॥628॥

❁अर्थ - क्षपक श्रेणी की संख्या उपशमवालों से दुगुनी होती है। इसलिये निरन्तर आठ समयों में क्षपकश्रेणी चढ़नेवालों की संख्या क्रम से बत्तीस, अड़तालीस, साठ, बहत्तर, चौरासी, छियानवे, एक सौ आठ, एक सौ आठ होती है ॥628॥

निरन्तर आठ समयों में श्रेणी चढ़ने वाले अधिकतम जीवों की संख्या

समय	जीवों की संख्या	
	उपशामक	क्षपक
1	16	32
2	24	48
3	30	60
4	36	72
5	42	84
6	48	96
7	54	108
8	54	108
कुल	304	608

अट्ठेव सयसहस्सा, अट्ठाणउदी तहा सहस्साणं।
संखा जोगिजिणाणं, पंचसयविउत्तरं वंदे॥629॥

❁अर्थ - सयोगकेवली जिनों की संख्या आठ लाख अठानवे हजार पाँच सौ दो (8,98,502) है। इनकी मैं सदाकाल वंदना करता हूँ॥629॥

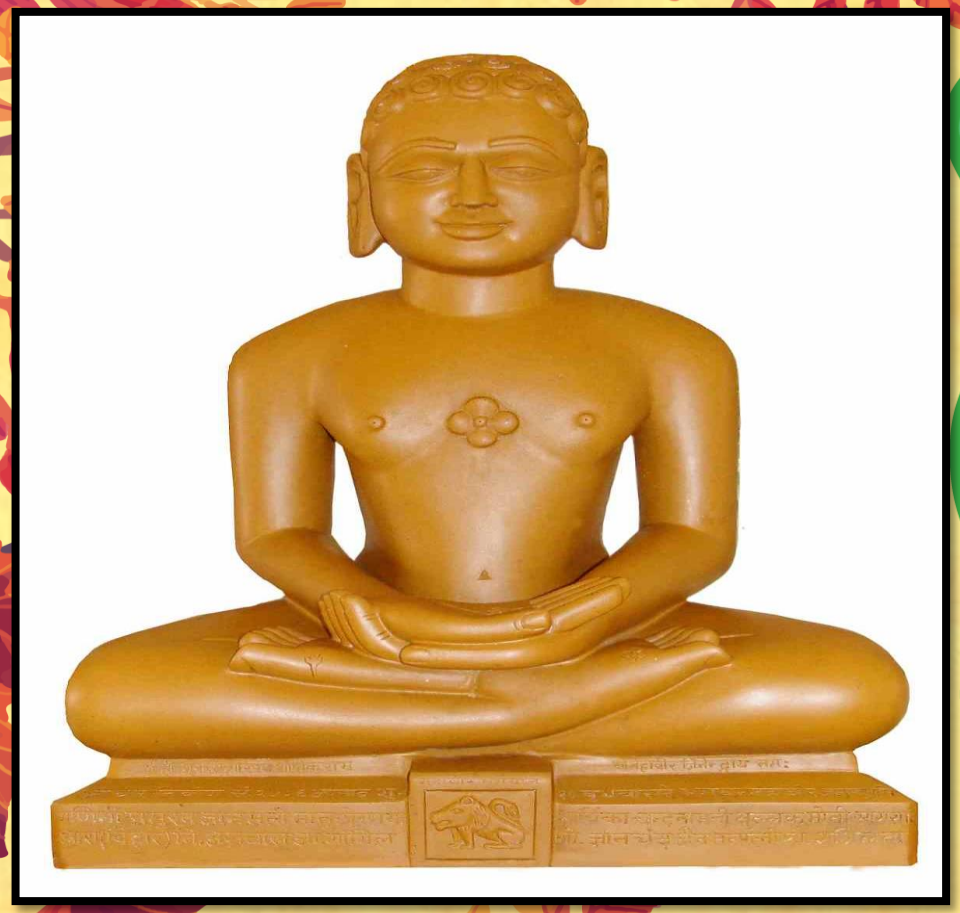

सयोगकेवली जिन
8,98,502

होंति खवा इगिसमये, बोहियबुद्धा य पुरिसवेदा य।
उक्कस्सेणट्ठुत्तर-सयप्पमा सग्गदो य चुदा॥630॥
पत्तेयबुद्धतित्थय-रित्थिणउंसयमणोहिणाणजुदा।
दसछक्कवीसदसवीसट्ठावीसं जहाकमसो॥631॥
जेट्ठावरबहुमज्झिम, ओगाहणगा दु चारि अट्ठेव।
जुगवं हवंति खवगा, उवसमगा अद्धमेदेसिं॥632॥

❀अर्थ - युगपत्-एक समय में क्षपक श्रेणीवाले जीव उत्कृष्टता से निम्नप्रकार से पाये जाते हैं:- बोधितबुद्ध एक सौ आठ, पुरुषवेदी एक सौ आठ, स्वर्ग से च्युत होकर मनुष्य होकर क्षपकश्रेणी माँडनेवाले एक सौ आठ, प्रत्येकबुद्धि ऋद्धि के धारक दश, तीर्थंकर छह, स्त्री-वेदी बीस, नपुंसकवेदी दश, मन:पर्ययज्ञानी बीस, अवधिज्ञानी अट्ठाईस, मुक्त होने के योग्य शरीर की उत्कृष्ट अवगाहना के धारक दो, जघन्य अवगाहना के धारक चार, समस्त अवगाहनाओं की मध्यवर्ती अवगाहना के धारक आठ ॥630-632॥

श्रेणी में विभिन्न जीवों की एक समय में संभावित उत्कृष्ट संख्या

जीव	क्षपकों की संख्या	उपशामकों की संख्या
बोधितबुद्ध	108	54
प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि के धारक	10	5
स्वर्ग से चयकर श्रेणी आरोहण करने वाले	108	54
तीर्थंकर	6	3
पुरुषवेदी	108	54
स्त्रीवेदी	20	10
नपुंसकवेदी	10	5
मन:पर्ययज्ञानी	20	10
अवधिज्ञानी	28	14
उत्कृष्ट अवगाहना के धारक	2	1
जघन्य अवगाहना के धारक	4	2
सर्व अवगाहना के मध्यवर्ती अवगाहना के धारक	8	4

सत्तादी अट्ठंता, छण्णवमज्झा य संजदा सव्वे।
अंजलिमोलियहत्थो, तियरणसुद्धे णमंसामि॥633॥

❁अर्थ - सात का अंक आदि में और अन्त में आठ का अंक लिखकर दोनों के मध्य में छह नौ के अंक लिखने पर 89999997 तीन कम नौ करोड़ संख्या प्रमाण सब संयमियों को मैं हाथों की अंजलि मस्तक से लगाकर मन, वचन, काय की शुद्धि से नमस्कार करता हूँ॥633॥

कुल संयमियों की संख्या

गुणस्थान	संख्या
6वां गुणस्थान	5,93,98,206
7वां गुणस्थान	2,96,99,103
8 वां गुणस्थान	897
9वां गुणस्थान	897
10वां गुणस्थान	897
11वां गुणस्थान	299
12वां गुणस्थान	598
13वां गुणस्थान	8,98,502
14वां गुणस्थान	598
जोड	89,999,997

सर्व संयमी जीव

8,99,99,997

3 कम नौ करोड़

299 उपशम श्रेणी में मानकर कथन किया है ।

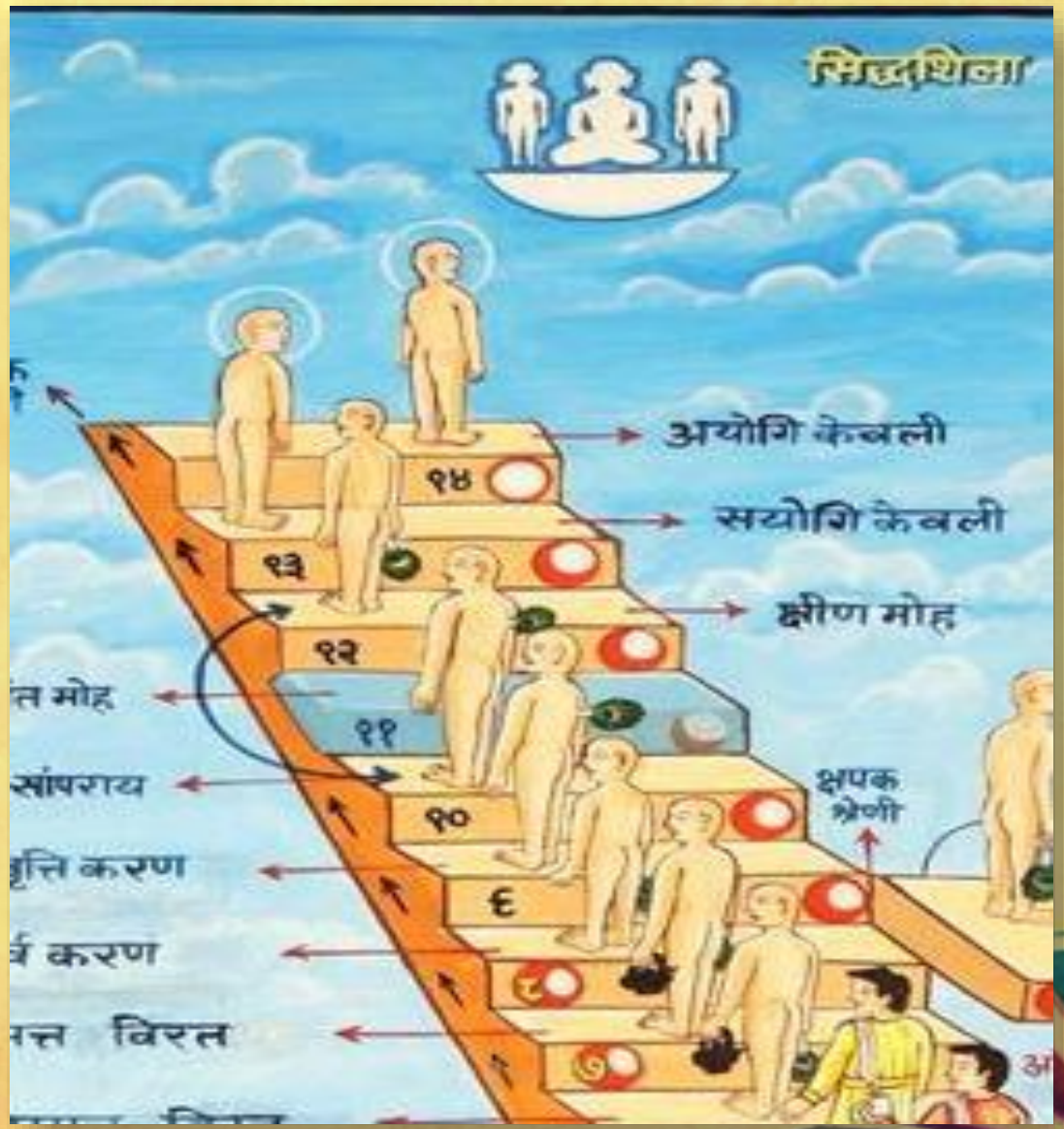

ओघासंजदमिस्सय-सासणसम्माण भागहारा जे।
रूऊणावलियासंखेज्जेणिह भजिय तत्थ णिक्खित्ते॥634॥
देवाणं अवहारा, होंति असंखेण ताणि अवहरिय।
तत्थेव य पक्खित्ते, सोहम्मीसाण अवहारा॥635॥ जुम्मं

❁अर्थ - गुणस्थानसंख्या में असंयत, मिश्र, सासादन के भागहारों का जो प्रमाण बताया है उसमें एक कम आवली के असंख्यातवें भाग का भाग देने से जो लब्ध आवे उसको भागहार के प्रमाण में मिलाने से देवगति संबंधी भागहार का प्रमाण होता है तथा

❁देवगति संबंधी भागहार के प्रमाण में एक कम आवली के असंख्यातवें भाग का भाग देने से जो लब्ध आवे उसको देवगति संबंधी भागहार के प्रमाण में मिलाने से सौधर्म-ऐशान स्वर्ग संबंधी भागहार का प्रमाण होता है ॥634-635॥

गुणस्थान में संख्या का भागहार

	असंयत	मिश्र	सासादन
सामान्य	असंख्यात	असंख्यात^2	(असंख्यात)^2 × संख्यात
देवगति	पूर्व + $\frac{\text{पूर्व}}{\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} - 1}$	पूर्व + $\frac{\text{पूर्व}}{\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} - 1}$	पूर्व + $\frac{\text{पूर्व}}{\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} - 1}$
सौधर्म-ऐशान	पूर्व + $\frac{\text{पूर्व}}{\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} - 1}$	पूर्व + $\frac{\text{पूर्व}}{\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} - 1}$	पूर्व + $\frac{\text{पूर्व}}{\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} - 1}$

अर्थात् कुल सम्यग्दृष्टियों में असंख्यात बहुभाग देवों में है, शेष एक भाग तीन गतियों में है ।

इसी प्रकार सासादन एवं मिश्र गुणस्थान का भी लगाना चाहिये ।

पुनः देवों में जितने सम्यग्दृष्टि हैं, उनका असंख्यात बहुभाग सौधर्म-2 में है, शेष एक भाग बाकी सब स्वर्ग एवं भवनत्रिक में है ।

सोहम्मसाणहारम-संखेण य संखरूवसंगुणिदे।
उवरि असंजदमिस्सय-सासणसम्माण अवहारा॥636॥

- अर्थ - सौधर्म-ऐशान स्वर्ग के सासादन गुणस्थान में जो भागहार का प्रमाण है उससे असंख्यातगुणा सानत्कुमार-माहेन्द्र स्वर्ग के असंयतगुणस्थान के भागहार का प्रमाण है।
- इससे असंख्यातगुणा मिश्र गुणस्थान के भागहार का प्रमाण है तथा
- मिश्र के भागहार से संख्यातगुणा सासादन गुणस्थान के भागहार का प्रमाण है ॥636॥

सानत्कुमार-माहेन्द्र में भागहार

माना कि सौधर्म-2 का सासादन भागहार = (A)

असंयत	मिश्र	सासादन
A × असंख्यात	A × असं. × असं.	A × असं. × असं. × संख्यात
अर्थात् सौधर्म-2 के सम्यग्दृष्टियों से सानत्कुमार-2 के सम्यक्त्वी असंख्यातगुणा हीन हैं ।	वहीं के सम्यक्त्वी जीवों से मिश्रगुणस्थानवर्ती असंख्यात गुणा हीन हैं ।	उनमें वहीं के सासादनवर्ती संख्यात गुणे हीन हैं ।

❁भागहार अधिक होगा, तो प्राप्त लब्ध हीन होगा ।

सोहम्मादासारं, जोइसिवणभवणतिरियपुढवीसु।
अविरदमिस्सेऽसंखं, संखासंखगुणं सासणे देसे॥637॥

❀अर्थ - सौधर्म स्वर्ग से लेकर सहस्रार स्वर्ग पर्यन्त पाँच युगल, ज्योतिषी, व्यंतर, भवनवासी, तिर्यंच तथा सातों नरकपृथ्वी, इस तरह ये कुल 16 स्थान हैं। इनके अविरत और मिश्र गुणस्थान में असंख्यात का गुणक्रम है और सासादन गुणस्थान में संख्यात का तथा तिर्यग्गतिसंबंधी देशसंयम गुणस्थान में असंख्यात का गुणक्रम समझना चाहिये ॥637॥

माना- पल्य =1,00,00,000, असं=10, सं=5, आ/असं=3

- सामान्य असंयत की संख्या=

  प/असं.=10000000/10=10,00,000

- देवगति असंयत = 10 +10/3-1=15,

  100,00,000/15 =6,66,666

- सौधर्म-2 असंयत = 15+15/3-1=22.5,

  100,00,000/22.5 = 4,44,444

माना- पल्य=1,00,00,000, असं=10, सं=5, आ/असं=3

- सामान्य मिश्र = $1,00,00,000/10^2 = 1,00,000$
- देवगति मिश्र = 100+100/3 -1=150,
- 100,00,000/150 = 66,666
- सौधर्म-2 मिश्र=150 +150/3-1=225, 100,00,000/225 = 44,444

माना- पल्य=1,00,00,000, असं=10, सं=5, आ/असं=3

- सामान्य सासादन =

  $1,00,00,000/10^2 \times 5 = 20,000$

- देव सासादन = 500 +500/3-1 = 750,

  100,00,000/750=13,333

इसी क्रम को कहा तक लगाना ?

ब्रह्म-2 के	<असंयत	<	मिश्र	<	सासादन
लांतव-2 के	<असंयत	<	मिश्र	<	सासादन
शुक्र-2 के	<असंयत	<	मिश्र	<	सासादन
शतार-2 के	<असंयत	<	मिश्र	<	सासादन
ज्योतिषी	<असंयत	<	मिश्र	<	सासादन
व्यंतर	<असंयत	<	मिश्र	<	सासादन
भवनवासी	<असंयत	<	मिश्र	<	सासादन
तिर्यंच	<असंयत	<	मिश्र	<	सासादन

तिर्यंच सासादन से तिर्यंच के देशसंयमी का भागहार असंख्यात गुणा है ।

इसी क्रम को कहा तक लगाना ?

जो तिर्यंच देशसंयमी का भागहार है, वही प्रथम नरक के असंयत का भागहार है ।

प्रथम पृथ्वी	असंयत	<	मिश्र	<	सासादन
द्वितीय पृथ्वी	<असंयत	<	मिश्र	<	सासादन
तृतीय पृथ्वी	<असंयत	<	मिश्र	<	सासादन
चतुर्थ पृथ्वी	<असंयत	<	मिश्र	<	सासादन
पंचम पृथ्वी	<असंयत	<	मिश्र	<	सासादन
षष्टम पृथ्वी	<असंयत	<	मिश्र	<	सासादन
सप्तम पृथ्वी	<असंयत	<	मिश्र	<	सासादन

चरमधरासाणहरा, आणदसम्माण आरणप्पहुदिं।
अंतिमगेवेज्जंतं, सम्माणमसंखसंखगुणहारा॥638॥

❁अर्थ - सप्तम पृथ्वी के सासादन संबंधी भागहार से आनत-प्राणत के असंयत का भागहार असंख्यातगुणा है तथा

❁इसके आगे आरण-अच्युत से लेकर नौवें ग्रैवेयक पर्यन्त दश स्थानों में असंयत का भागहार क्रम से संख्यातगुणा-संख्यातगुणा है ॥638॥

असंयत भागहार

❁सप्तम पृथ्वी का सासादन का भागहार = B

आनत-2	B x असंख्यात
आरण-2	B x (संख्यात)
प्रथम ग्रैवेयक	B x $(\text{संख्यात})^2$
द्वितीय ग्रैवेयक	B x $(\text{संख्यात})^3$
तृतीय ग्रैवेयक	B x $(\text{संख्यात})^4$
चतुर्थ ग्रैवेयक	B x $(\text{संख्यात})^5$
पंचम ग्रैवेयक	B x $(\text{संख्यात})^6$
षष्टम ग्रैवेयक	B x $(\text{संख्यात})^7$
सप्तम ग्रैवेयक	B x $(\text{संख्यात})^8$
अष्टम ग्रैवेयक	B x $(\text{संख्यात})^9$
नवम ग्रैवेयक	B x $(\text{संख्यात})^{10}$

तत्तो ताणुत्ताणं, वामाणमणुद्दिसाण विजयादि।
सम्माणं संखगुणो, आणदमिस्से असंखगुणो॥639॥

- अर्थ - इसके अनन्तर आनत-प्राणत से लेकर नवम ग्रैवेयक पर्यंत के मिथ्यादृष्टि जीवों का भागहार क्रम से अंतिम ग्रैवेयक संबंधी असंयत के भागहार से संख्यातगुणा-संख्यातगुणा है।
- इस अंतिम ग्रैवेयक संबंधी मिथ्यादृष्टि के भागहार से क्रमपूर्वक संख्यातगुणा-संख्यातगुणा नव अनुदिश और विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित के असंयतों का भागहार है।
- विजयादिक संबंधी असंयत के भागहार से आनत-प्राणत संबंधी मिश्र का भागहार असंख्यातगुणा है ॥639॥

मिथ्यादृष्टि भागहार

आनत-2	$B \times (\text{संख्यात})^{11}$
आरण-2	$B \times (\text{संख्यात})^{12}$
प्रथम ग्रैवेयक	$B \times (\text{संख्यात})^{13}$
द्वितीय ग्रैवेयक	$B \times (\text{संख्यात})^{14}$
तृतीय ग्रैवेयक	$B \times (\text{संख्यात})^{15}$
चतुर्थ ग्रैवेयक	$B \times (\text{संख्यात})^{16}$
पंचम ग्रैवेयक	$B \times (\text{संख्यात})^{17}$
षष्टम ग्रैवेयक	$B \times (\text{संख्यात})^{18}$
सप्तम ग्रैवेयक	$B \times (\text{संख्यात})^{19}$
अष्टम ग्रैवेयक	$B \times (\text{संख्यात})^{20}$
नवम ग्रैवेयक	$B \times (\text{संख्यात})^{21}$

9 अनुदिश

$B \times (\text{संख्यात})^{22}$

$B \times (\text{संख्यात})^{23}$

4 विमान

आनत-2
मिश्र
भागहार

$B \times (\text{संख्यात})^{23} \times \text{असंख्यात}$

तत्तो संखेज्जगुणो, सासणसम्माण होदि संखगुणो।
उत्तट्ठाणे कमसो, पणछस्सत्तट्ठचदुरसंदिट्ठी॥640॥

❁अर्थ - आनत-प्राणत संबंधी मिश्र के भागहार से आरण अच्युत से लेकर नवम ग्रैवेयक पर्यंत दश स्थानों में मिश्रसंबंधी भागहार का प्रमाण क्रम से संख्यातगुणा-संख्यातगुणा है। यहाँ पर संख्यात की सहनानी आठ का अंक है।

❁अंतिम ग्रैवेयक संबंधी मिश्र के भागहार से आनत-प्राणत से लेकर नवम ग्रैवेयक पर्यन्त ग्यारह स्थानों में सासादनसम्यग्दृष्टि के भागहार का प्रमाण क्रम से संख्यातगुणा-संख्यातगुणा है।

❁यहाँ पर संख्यात की सहनानी चार का अंक है। इन पूर्वोक्त पाँच स्थानों में संख्यात की सहनानी क्रम से पाँच, छह, सात, आठ और चार के अंक हैं ॥640॥

	मिश्र भागहार	सासादन भागहार
आनत-2	B x (संख्यात)^{23} x असं.	B x (संख्यात)^{34} x असं.
आरण-2	B x (संख्यात)^{24} x असं.	B x (संख्यात)^{35} x असं.
प्रथम ग्रैवेयक	B x (संख्यात)^{25} x असं.	B x (संख्यात)^{36} x असं.
द्वितीय ग्रैवेयक	B x (संख्यात)^{26} x असं.	B x (संख्यात)^{37} x असं.
तृतीय ग्रैवेयक	B x (संख्यात)^{27} x असं.	B x (संख्यात)^{38} x असं.
चतुर्थ ग्रैवेयक	B x (संख्यात)^{28} x असं.	B x (संख्यात)^{39} x असं.
पंचम ग्रैवेयक	B x (संख्यात)^{29} x असं.	B x (संख्यात)^{40} x असं.
षष्टम ग्रैवेयक	B x (संख्यात)^{30} x असं.	B x (संख्यात)^{41} x असं.
सप्तम ग्रैवेयक	B x (संख्यात)^{31} x असं.	B x (संख्यात)^{42} x असं.
अष्टम ग्रैवेयक	B x (संख्यात)^{32} x असं.	B x (संख्यात)^{43} x असं.
नवम ग्रैवेयक	B x (संख्यात)^{33} x असं.	B x (संख्यात)^{44} x असं.

सगसगअवहारेहिं, पल्ले भजिदे हवंति सगरासी।
सगसगगुणपणिवण्णे, सगसगरासीसु अवणिदे वामा॥641॥

- अर्थ - अपने-अपने भागहार का पल्य में भाग देने से अपनी-अपनी राशि के जीवों का प्रमाण निकलता है तथा
- अपनी-अपनी सामान्य राशि में से असंयत, मिश्र, सासादन तथा देशव्रत का प्रमाण घटाने से अवशिष्ट मिथ्यादृष्टि जीवों का प्रमाण रहता है ॥641॥

विशेष

अपने-अपने भागहार का भाग पल्य में देने पर अपनी-अपनी राशि प्राप्त होती है ।

इन सर्व स्थानों में कुल राशि में से सासादन, मिश्र, असयंत, देशसयंम का प्रमाण घटाने पर मिथ्यादृष्टि जीवों की संख्या आती है ।

मिथ्यादृष्टि जीवों का प्रमाण

देव अथवा नारकी	• अपनी गति का प्रमाण — (सासादन + मिश्र + असंयत)
नारकी, भवनत्रिक, सौधर्म स्वर्ग से लेकर सहस्त्रसार स्वर्ग पर्यन्त	• कुछ कम अपनी-अपनी राशि
तिर्यंच	• तिर्यंच गति के जीव — (सासादन + मिश्र + असंयत + देशसंयत)

सर्वार्थसिद्धि के देवों का प्रमाण

= मनुष्यनी से 3 या 7 गुणा

सर्व असंयत ही हैं

तेरसकोडी देसे, बावण्णं सासणे मुणेदव्वा।
मिस्सा वि य तद्दुगुणा, असंजदा सत्तकोडिसयं॥642॥

- अर्थ - देशसंयम गुणस्थान में तेरह करोड़,
- सासादन में बावन करोड़,
- मिश्र में एक सौ चार करोड़,
- असंयत में सात सौ करोड़ मनुष्य हैं।
- प्रमत्तादि गुणस्थानवाले जीवों का प्रमाण पूर्व में ही बता चुके हैं। इसप्रकार यह गुणस्थानों में मनुष्य जीवों का प्रमाण है ॥642॥

मनुष्य गति - संख्या

सासादन	मिश्र	असंयत	देशसंयत
52 करोड़	104 करोड़	700 करोड़	13 करोड़

जीविदरे कम्मचये, पुण्णं पावोत्ति होदि पुण्णं तु।
सुहपयडीणं दव्वं, पावं असुहाण दव्वं तु।643॥

❁अर्थ - जीव पदार्थ में सामान्य से मिथ्यादृष्टि और सासादन गुणस्थानवाले जीव पाप हैं और मिश्र गुणस्थानवाले पुण्य और पाप के मिश्ररूप हैं। तथा असंयत से लेकर सब ही पुण्य जीव हैं।

❁इसके अनन्तर अजीव पदार्थ का वर्णन करते हैं। अजीव पदार्थ में कार्मण स्कंध के दो भेद हैं - एक पुण्य दूसरा पाप। शुभ प्रकृतियों के द्रव्य को पुण्य और अशुभ प्रकृतियों के द्रव्य को पाप कहते हैं॥643॥

जीव पदार्थ — पुण्य, पापरूप विभाजन

	गुणस्थान	जीव	कारण
1	मिथ्यात्व	पाप	मिथ्यात्व भाव होने से
2	सासादन		अनंतानुबंधी कषाय के उदय से मिथ्यात्व सदृश गुण को प्राप्त होने से
3	मिश्र	मिश्र (पुण्य-पापरूप)	युगपत् सम्यक्त्व और मिथ्यात्वरूप भाव
4	असंयत सम्यक्त्व	पुण्य	सम्यक्त्व संयुक्त
5	देशसंयत		सम्यक्त्व व देशव्रत से संयुक्त
6-14	प्रमत्तादिक		सम्यक्त्व व सकलव्रत से संयुक्त

विशेष

अजीव पुण्य, पाप आदि पदार्थ में कार्मण स्कंध को बताया जाता है ।

शुभ प्रकृतियों के द्रव्य को अजीव पुण्य और अशुभ प्रकृतियों के द्रव्य को अजीव पाप कहते हैं ।

अजीव पदार्थ—पुण्य, पापरूप विभाजन एवं प्रमाण

कर्म	द्रव्य पाप (अशुभ प्रकृति)	द्रव्य पुण्य (शुभ प्रकृति)
घातिया—ज्ञानावरणादि 4	सर्व प्रकृतियाँ	
अघातिया — वेदनीय	असाता	साता
— आयु	नरकायु	तिर्यंचायु, मनुष्यायु, देवायु
— नाम	अशुभ प्रकृतिया	शुभ प्रकृतिया
— गोत्र	नीच	उच्च
कुल द्रव्य (परमाणुओं की संख्या)	कुल सत्त्व − द्रव्य पुण्य = (कुछ कम $1\frac{1}{2}$ गुणहानि × समयप्रबद्ध) − द्रव्य पुण्य = कुछ कम $1\frac{1}{2}$ गुणहानि समयप्रबद्ध का संख्यात बहुभाग	कुछ कम $\mathbf{1\frac{1}{2}}$ **गुणहानि** × $\frac{\text{समयप्रबद्ध}}{\text{संख्यात}}$ = कुल सत्त्व का संख्यातवां भाग

आसवसंवरदव्वं, समयपबद्धं तु णिज्जरादव्वं।
तत्तो असंखगुणिदं, उक्कस्सं होदि णियमेण॥644॥

❁अर्थ - आस्रव और संवर का द्रव्यप्रमाण समयप्रबद्धप्रमाण है और उत्कृष्ट निर्जराद्रव्य समयप्रबद्ध से नियम से असंख्यातगुणा है ॥644॥

आस्रवादि का द्रव्य प्रमाण

आस्रव	संवर	निर्जरा	निर्जरा
1 समयप्रबद्ध	1 समयप्रबद्ध	1 समयप्रबद्ध (सामान्य से)	असंख्यात समयप्रबद्ध (उत्कृष्टरूप से)

बंधो समयपबद्धो, किञ्चूण दिवड्ढमेत्तगुणहाणी।
मोक्खो य होदि एवं, सद्दहिदव्वा दु तच्चट्ठा॥645॥

❁अर्थ - बंध द्रव्य भी समयप्रबद्ध प्रमाण ही है। और

❁मोक्षद्रव्य किंचित् हीन डेढ़ गुणहानि से गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण होता है।

❁इसप्रकार तत्त्वार्थों का श्रद्धान करना चाहिये ॥645॥

अजीव बंध, मोक्ष का प्रमाण

बंध

1 समयप्रबद्ध

मोक्ष

$\frac{3}{2}$- गुणहानि × समयप्रबद्ध

खीणे दंसणमोहे, जं सद्दहणं सुणिम्मलं होई।
तं खाइयसम्मत्तं, णिच्चं कम्मक्खवणहेदू॥646॥

❁अर्थ - दर्शनमोहनीय कर्म के क्षीण हो जाने पर जो निर्मल श्रद्धान होता है उसको क्षायिक सम्यक्त्व कहते हैं।

❁यह सम्यक्त्व नित्य है और कर्मों के क्षय होने का कारण है ॥646॥

क्षायिक सम्यक्त्व

दर्शन मोहनीय की 3

एवं अनंतानुबंधी की 4 प्रकृतियों के नष्ट होने पर

जो अति निर्मल श्रद्धान प्रकट होता है,

वह क्षायिक सम्यक्त्व है ।

क्षायिक सम्यक्त्व

प्रतिपक्षी कर्म के पूर्ण नाश से उत्पन्न हुआ है

इसलिए नित्य है ।

पूर्वबद्ध कर्म की निर्जरा का कारण है

इसलिए कर्मक्षय का हेतु है ।

क्षायिक सम्यक्त्व होने पर मुक्ति कब होती है?

उसी भव में

तीसरे भव में

चतुर्थ भव में

मनुष्य → देव → मनुष्य

मनुष्य → नारकी → मनुष्य

मनुष्य → भोगभूमि मनुष्य → सौधर्म-2 देव → मनुष्य

नियम से मुक्ति प्राप्त करता है ।

वयणेहिं वि हेदूहिं वि, इंदियभयआणएहिं रूवेहिं।
वीभच्छजुगुच्छाहिं य, तेलोक्केण वि ण चालेज्जो॥647॥

❀अर्थ - कुत्सित वचनों से, मिथ्याहेतु और दृष्टांतों से, इन्द्रियों को भय उत्पन्न करने वाले भयंकर रूपों से, घिनावनी वस्तुओं से उत्पन्न हुई ग्लानि से, बहुत कहने से क्या, तीनों लोकों के द्वारा भी क्षायिक सम्यक्त्व को चलायमान नहीं किया जा सकता॥647॥

क्षायिक सम्यक्त्व

कुत्सित वचनों से

कुत्सित हेतु, दृष्टांतों से

भयकारी अनेक आकार, घटना आदि से

ग्लानि उत्पन्न करने वाली वस्तुओं से

तीन लोक मिलकर प्रयास करें तो

भी चलायमान नहीं होता ।

दंसणमोहक्खवणा-पट्ठवगो कम्मभूमिजादो हु।
मणुसो केवलिमूले, णिट्ठवगो होदि सव्वत्थ॥648॥

❁अर्थ - दर्शनमोह की क्षपणा का प्रारंभ कर्मभूमि में उत्पन्न हुआ मनुष्य ही केवली के पादमूल में ही करता है। किन्तु निष्ठापक चारों गतियों में होता है ॥648॥

क्षपणा का प्रस्थापक

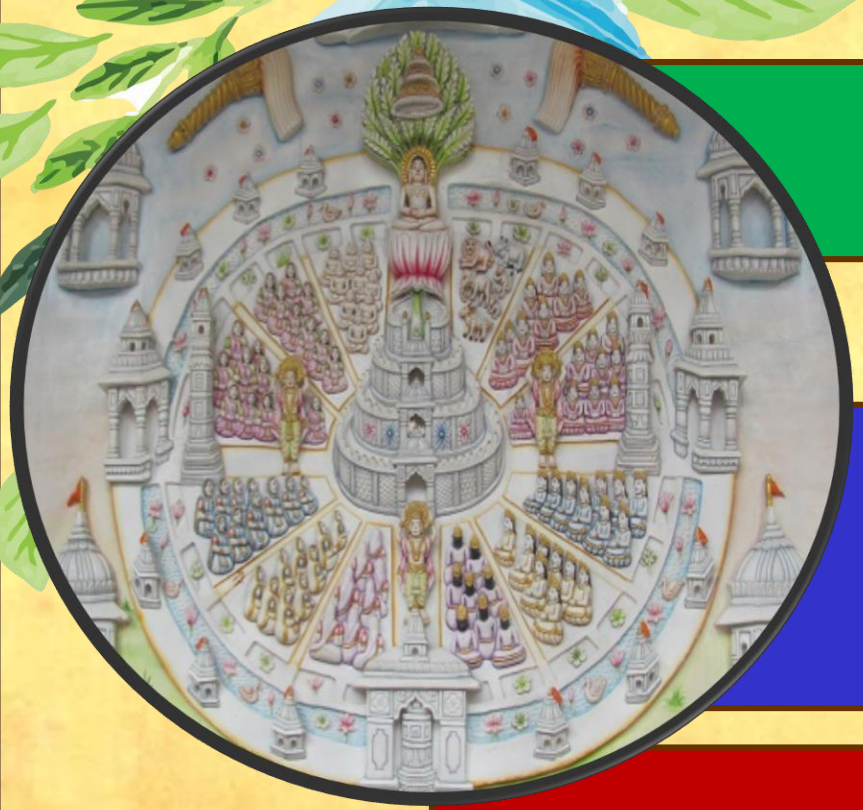

याने प्रारंभ करने वाला

कर्मभूमि मनुष्य

केवली अथवा श्रुतकेवली के पादमूल में स्थित

क्षपणा का निष्ठापक

अर्थात समापन करने वाला

चारों गति के जीव

सामान्यतः मनुष्य ही क्षपणा का निष्ठापक होता है,

परन्तु 3 करण के पश्चात् कृतकृत्य वेदक के काल में यदि जीव का मरण हो जावे,

तो पूर्वबद्ध आयु के अनुसार अगली गति के प्रारंभिक अंतर्मुहूर्त में वह क्षपणा का निष्ठापक होता है।

क्षायिक सम्यग्दृष्टि

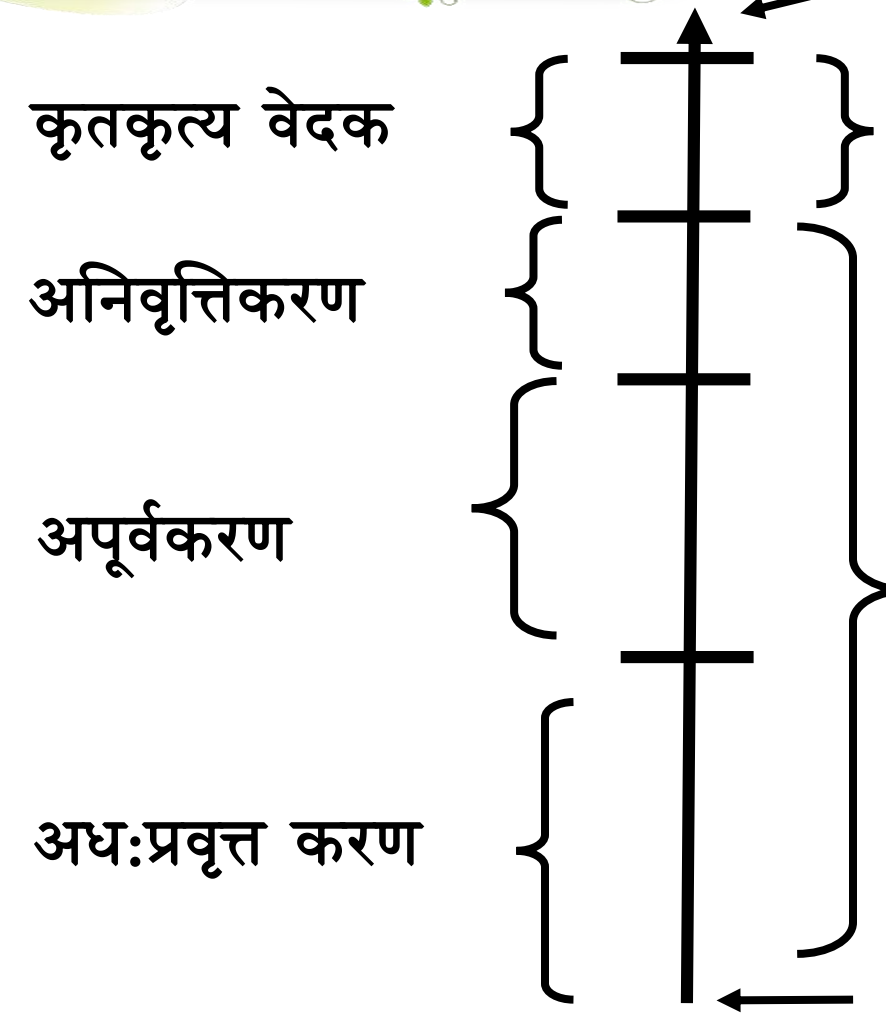

निष्ठापक (4 गति का जीव)

कृतकृत्य वेदक

यहाँ मरण संभव है

अनिवृत्तिकरण

अपूर्वकरण

दर्शन मोह की क्षपणा के 3 करण

यहाँ मरण संभव नहीं है

अध:प्रवृत्त करण

प्रस्थापक

दंसणमोहुदयादो, उप्पज्जइ जं पयत्थसद्दहणं।
चलमलिणमगाढं तं, वेदयसम्मत्तमिदि जाणे॥649॥

❁अर्थ - दर्शनमोहनीय की सम्यक्त्व प्रकृति का उदय होने पर जो तत्त्वार्थ-श्रद्धान चल, मलिन वा अगाढ़ होता है, उसे वेदकसम्यक्त्व जानो ॥649॥

वेदक सम्यक्त्व

सम्यक्त्व मोहनीय का उदय होने पर

जो तत्त्वार्थ-श्रद्धान चल, मल, अगाढ़ दोषयुक्त होता है,

उसे वेदक सम्यक्त्व कहते हैं ।

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व कैसे ?

मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी-4 का

उदयाभावी क्षय

सदवस्थारूप उपशम

तत्त्वार्थ-श्रद्धान

सम्यक्त्व प्रकृति का

उदय

चल, मलादि दोष

क्षयोपशम सम्यक्त्व में दोष

चल

जल की तरंगों की तरह चंचल

आप्त, आगम, पदार्थों के विषय में चंचलपना

मल

बाह्य मल से सहित शुद्ध सोना

शंकादि मल सहित सम्यक्त्व

अगाढ़

वृद्ध के हाथ की लाठी

आप्तादि की प्रतीति में शिथिलता

दंसणमोहुवसमदो, उप्पज्जइ जं पयत्थसद्दहणं।
उवसमसम्मत्तमिणं, पसण्णमलपंकतोयसमं॥650॥

❁अर्थ - अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ के उदय का अभाव लक्षणरूप अप्रशस्त उपशम और दर्शनमोह की मिथ्यात्व, सम्यक् मिथ्यात्व और सम्यक्त्व प्रकृति के प्रशस्त उपशम से मलपंक नीचे बैठ जाने से निर्मल हुए जल की तरह जो पदार्थ का श्रद्धान उत्पन्न होता है उसका नाम उपशम सम्यक्त्व है ॥650॥

उपशम सम्यक्त्व

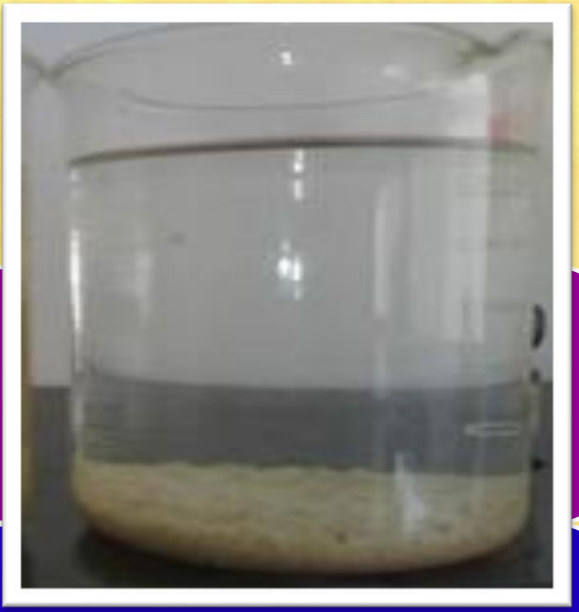

दर्शन मोहनीय की 3 प्रकृतियों का उपशम

एवं अनंतानुबंधी चतुष्क के उदय का अभाव होने पर

जो पदार्थों का श्रद्धान उत्पन्न होता है, वह उपशम सम्यक्त्व है ।

जैसे- मलीन जल कतक फलादि के द्वारा मल के नीचे बैठ जाने पर स्वच्छ होता है ।

खयउवसमियविसोही, देसणपाउग्गकरणलद्धी य।
चत्तारि वि सामण्णा, करणं पुण होदि सम्मत्ते॥651॥

❁अर्थ - क्षयोपशम, विशुद्धि, देशना, प्रायोग्य, करण ये पाँच लब्धि हैं। इनमें पहली चार तो सामान्य हैं, भव्य अभव्य दोनों के ही संभव हैं। किन्तु करण-लब्धि विशेष है। यह भव्य के ही हुआ करती है

❁वह करण लब्धि भी सम्यक्त्व और चारित्र ग्रहण के समय होती है ॥651॥

उपशम सम्यक्त्व के लिए आवश्यक 5 लब्धिया

क्षयोपशम लब्धि	• प्रतिसमय कर्मों का अनुभाग अनंतगुणा हीन होकर उदय में आना ।
विशुद्धि लब्धि	• धर्मानुरागरूप विशुद्ध परिणाम प्राप्त होना ।
देशना लब्धि	• जिनदेव द्वारा उपदिष्ट 7 तत्त्व, 6 द्रव्य आदि उपदेश का धारण, विचार ।
प्रायोग्य लब्धि	• बंध, सत्त्व अंत:कोड़ाकोड़ी सागर रहना आदि योग्य अवस्थाओं का होना ।
करण लब्धि	• अध:करण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण रूप भावों का होना

अंतर

प्रथम 4 लब्धि	करण लब्धि
प्रथम 4 लब्धि भव्य-अभव्य दोनों के होती है	करण लब्धि मात्र भव्य जीवों को होती है ।
प्रथम 4 लब्धि होने पर सम्यक्त्व होना अनिवार्य नहीं है ।	करण लब्धि होने पर सम्यक्त्व होता ही है ।
प्रथम 4 लब्धि अनेक बार संसार में हो जाती है ।	करण लब्धि सम्यक्त्व के पूर्व ही कभी होती है ।

चदुगदिभव्वो सण्णी, पज्जत्तो सुज्झगो य सागारो।
जागारो सल्लेस्सो, सलद्धिगो सम्ममुवगमई॥652॥

❀अर्थ - जो जीव चार गतियों में से किसी एक गति का धारक तथा भव्य, संज्ञी, पर्याप्त विशुद्धि - मंदकषाय रूप परिणति से युक्त, जागृत - स्त्यानगृद्धि आदि तीन निद्राओं से रहित, साकार उपयोगयुक्त और शुभ लेश्या का धारक होकर करणलब्धिरूप परिणामों का धारक होता है, वह जीव सम्यक्त्व को प्राप्त करता है ॥652॥

उपशम सम्यक्त्व के योग्य जीव

1. चार गतियों में से कोई गतिवाला

2. भव्य

3. संज्ञी

4. पर्याप्तक

5. विशुद्ध (मंदकषाय रूप हो)

6. स्त्यानगृद्धि आदि 3 निद्राओं से रहित जागृत

7. साकार (ज्ञानोपयोगी)

8. शुभ लेश्यावाला (नारकी को छोड़कर)

9. करण लब्धि को प्राप्त

चत्तारि वि खेत्ताइं, आउगबंधेण होदि सम्मत्तं।
अणुवदमहव्वदाइं, ण लहइ देवाउगं मोत्तुं॥653॥

❁अर्थ - चारों गतिसंबंधी आयुकर्म का बंध हो जाने पर भी सम्यक्त्व हो सकता है, किन्तु देवायु को छोड़कर शेष आयु का बंध होने पर अणुव्रत और महाव्रत नहीं होते ॥653॥

परभव आयुबंध के साथ सम्यक्त्वादि ग्रहण का नियम

कौन-सी आयु बंध जाने पर	ग्रहण हो सकते हैं		
	सम्यक्त्व	अणुव्रत	महाव्रत
नरकायु, तिर्यंचायु, मनुष्यायु	✓	×	×
देवायु	✓	✓	✓

ण य मिच्छत्तं पत्तो, सम्मत्तादो य जो य परिवडिदो।
सो सासणो त्ति णेयो, पंचमभावेण संजुत्तो॥654॥

❁अर्थ - जो जीव सम्यक्त्व से तो च्युत हो गया है किन्तु मिथ्यात्व को प्राप्त नहीं हुआ है उसको सासन कहते हैं।

❁यह जीव दर्शन मोहनीय की अपेक्षा पाँचवें पारिणामिक भाव से युक्त होता है ॥654॥

सासादन सम्यक्त्व

सम्यक्त्वरूपी रत्नपर्वत

मध्य अवस्था

मिथ्यात्वरूपी भूमि

सम्यक्त्व से च्युत

मिथ्यात्व को अप्राप्त

मध्य अवस्था वाला जीव

सासादन कहलाता है ।

यह भाव है

दर्शन मोह की अपेक्षा

चारित्र मोह की अपेक्षा

पारिणामिक

औदयिक

सद्दहणासद्दहणं, जस्स य जीवस्स होई तच्चेसु।
विरयाविरयेण समो, सम्मामिच्छो त्ति णायव्वो॥655॥

❁अर्थ - विरताविरत की तरह जिस जीव के तत्त्व के विषय में श्रद्धान और अश्रद्धान दोनों हों उसको सम्यग्मिथ्यादृष्टि समझना चाहिये ।655॥

सम्यग्मिथ्यादृष्टि

जिस जीव के तत्त्वार्थ में श्रद्धान और अश्रद्धान

एक साथ युगपत् पाए जाते हैं

वह सम्यग्मिथ्यादृष्टि है ।

यथा विरताविरत ।

मिच्छादिट्ठी जीवो, उवइट्ठं पवयणं ण सद्दहदि।
सद्दहदि असब्भावं, उवइट्ठं वा अणुवइट्ठं॥656॥

❁अर्थ - जो जीव जिनेन्द्रदेव के कहे हुए आप्त, आगम, पदार्थ का श्रद्धान नहीं करता, किन्तु कुगुरुओं के कहे हुए या बिना कहे हुए भी मिथ्या आप्त, आगम, पदार्थ का श्रद्धान करता है उसको मिथ्यादृष्टि कहते हैं ॥656॥

मिथ्यादृष्टि जीव

जिनदेव के द्वारा उपदिष्ट तत्त्व को नहीं मानता,

कुदेवादि के द्वारा उपदिष्ट तत्त्व को मानता है

अथवा बिना उपदेश के ही

पदार्थों का असत् श्रद्धान करता है,

वह मिथ्यादृष्टि जीव है ।

वासपुधत्ते खइया, संखेज्जा जइ हवंति सोहम्मे।
तो संखपल्लठिदिये, केवडिया एवमणुपादे॥657॥

❀अर्थ - क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव सौधर्म-ऐशान स्वर्ग में पृथक्त्व वर्ष में संख्यात उत्पन्न होते हैं तो संख्यात पल्य की स्थिति में कितने जीव उत्पन्न होंगे ? इसका त्रैराशिक करने से क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीवों का प्रमाण निकलता है क्योंकि बहुधा क्षायिक सम्यग्दृष्टि कल्पवासी देव होते हैं और कल्पवासी देव बहुत करके सौधर्म-ऐशान स्वर्ग में ही हैं ॥657॥

क्षायिक सम्यग्दृष्टि — संख्या

सबसे अधिक क्षायिक सम्यग्दृष्टि कल्पवासी देवों में हैं।

कल्पवासी देवों में सबसे अधिक देव सौधर्म-ऐशान में हैं ।

अतः वहा की मुख्यता से संख्या निकालते हैं ।

क्षायिक सम्यग्दृष्टि — संख्या

वर्ष पृथक्त्व में संख्यात क्षायिक सम्यक्त्वी उत्पन्न होते हैं,

तो संख्यात पल्य (याने 2 सागर) में कितने क्षायिक सम्यक्त्वी होंगे ?

$$\frac{\text{संख्यात}}{\text{वर्ष पृथक्त्व}} \times \text{संख्यात पल्य} = \frac{\text{पल्य}}{\text{संख्यात आवली}}$$

$$= \frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$$

संखावलिहिदपल्ला, खइया तत्तो य वेदमुवसमगा।
आवलिअसंखगुणिदा, असंखगुणहीणया कमसो॥658॥

- अर्थ - संख्यात आवली से भक्त पल्यप्रमाण क्षायिक सम्यग्दृष्टि हैं।
- क्षायिक सम्यग्दृष्टि के प्रमाण का आवली के असंख्यातवें भाग से गुणा करने पर जो प्रमाण हो उतना ही वेदक सम्यग्दृष्टि जीवों का प्रमाण है तथा
- क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीवों के प्रमाण से असंख्यातगुणा हीन उपशम सम्यग्दृष्टि जीवों का प्रमाण है ॥658॥

सम्यग्दृष्टि – संख्या

क्षायिक सम्यग्दृष्टि	$\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$
वेदक सम्यग्दृष्टि	क्षायिक सम्यग्दृष्टि $\times \frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} = \frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$
उपशम सम्यग्दृष्टि	$\frac{\text{क्षायिक सम्यग्दृष्टि}}{\text{असंख्यात}} = \frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$

पल्लासंखेज्जदिमा, सासणमिच्छा य संखगुणिदा हु।
मिस्सा तेहिं विहीणो, संसारी वामपरिमाणं॥659॥

- अर्थ - पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण सासादन मिथ्यादृष्टि जीव हैं और
- इनसे संख्यातगुणे मिश्र जीव हैं तथा
- संसारी जीवराशि में से क्षायिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक, सासादन, मिश्र इन पाँच प्रकार के जीवों का प्रमाण घटाने से जो शेष रहे उतना ही मिथ्यादृष्टि जीवों का प्रमाण है ॥659॥

सासादन	$\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$
मिश्र	सासादन × संख्यात
मिथ्यादृष्टि	संसारी जीव – 5 प्रकार के जीव
	१३- अर्थात् कुछ कम संसारी राशि

- Reference : गोम्मटसार जीवकाण्ड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका, गोम्मटसार जीवकांड - रेखाचित्र एवं तालिकाओं में

Presentation developed by

Smt. Sarika Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889